प्राक्कथन

हिन्दी - साहित्य के पूर्व मध्यकालीन भक्त साधकों एवं कवियों में कबीर का स्थान श्रेष्ठ है। उनकी वाणी में अनुभूति की सच्चाई है। वे पूर्ण सत्य का साक्षात्कार करनेवाले अत्यन्त संवेदनशील, सरल हृदय संत थे। उन्होंने जो कुछ कहा है वह सत्य है। कबीर अकेले संत कवि हैं, जिन्होंने समस्त धार्मिक आडंबरों एवं बाह्याचारों को नकार कर सहज जीवन - पध्दति को सर्वोच्च मूल्य के रूप में स्थापित किया।

मैं ` कबीर ` के प्रति बाल्यावस्था से ही आकृष्ट रही हूँ। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए मेरा मन हिन्दी सन्त साहित्य ने आकर्षित किया। वह सन्त भक्त कवि था कबीर। एम.ए. की पढाई के दौरान मुझे कबीर को पढ़ने का अवसर मिला। उसके बाद मैं कबीर के साहित्य की ओर अधिक आकर्षित हुई। तत्पश्चात एम.फिल्. के बहाने लघु शोध-प्रबन्ध के रूप में " कबीर के बाह्याचार संबंधी विचार " इस विषय पर मैंने कार्य करना निश्चित किया।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की प्रारंभिक अवस्था में कुछ प्रश्न मन में पैदा हुये, वे हैं ——

(१) कबीर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व क्या है ?

(२) कबीर - कालीन परिस्थितियाँ कैसी थीं ?

(३) कबीर के बाह्याचार सम्बन्धी विचारों के अन्तर्गत धर्म संबंधी चित्रण किस प्रकार हुआ है ?

(४) कबीर के काव्य में धर्म और आचार का स्वरूप क्या होगा ?

(५) कबीर के काव्य में दर्शन और आचार किस प्रकार होगा ?

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में मैंने इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने की कोशिश की है। इन उत्तरों को पाने के लिए उपर्युक्त प्रश्नों के आधार पर लघु शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा बनायी।

पहला अध्याय —

कबीर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

दूसरा अध्याय

कबीर कालीन भारत का समाज-दर्शन।

तीसरा अध्याय —

धर्म संबंधी कबीर की धारणा।

चौथा अध्याय —

धर्म और आचार।

पाँचवाँ अध्याय —

दर्शन और आचार।

उपसंहार —

इस प्रकार प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध छः अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार किया गया है। किसी भी कवि का व्यक्तित्व युग परिवेश से निर्मित होता है। वे तीक्ष्ण प्रतिभा तथा विलक्षण, अथक, सशक्त व्यक्तित्व से सम्पन्न थे।

दूसरे अध्याय में कबीर कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक परिस्थितियों पर विचार किया गया है, जो समसामयिक साहित्य को प्रभावित करती हैं।

तीसरे अध्याय में धर्म संबंधी कबीर की धारणा में मैंने कबीर के धार्मिक विचारों का विवेचन किया है।

चौथे अध्याय में, धर्म क्या है ? धर्म के लक्षण, कबीर का धर्म, कबीर की धर्मप्राणता, कबीर के आचार संबंधी विचार आदि पर विचार किया गया है।

पाँचवें अध्याय में दर्शन क्या है ? कबीर का ब्रह्म, कबीर के ईश्वर सम्बन्धी विचार, जीवात्मा,जगत, माया,मोक्ष, आचार संबंधी विचारों का वर्णन किया गया है।

छठा अध्याय उपसंहार का है। इसमें लघु शोध-प्रबन्ध के विषय का सारांश है।

प्रबन्ध के अंत में संदर्भ ग्रंथों की तथा सहायक ग्रंथों की सूची दी है। अंत में कोश एवं पत्रिकाओं की भी सूची दी है, जो सभी विषय विश्लेषण की आधारशिला बन सके हैं। साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्करण भी दिया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध आदरणीय गुरुदेव प्रा.शरद कणबरकर जी के सूक्ष्म निरीक्षण और निर्देशन का फल है। वे हमेशा सृजन कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी स्नेहपूर्ण आशीर्वाद के साथ मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन करते रहे। आपके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और विद्वत्तापूर्ण व्यासंग ने मेरे मार्ग की बाधाओं को दूर करते हुए पथ-प्रदर्शन किया। मैं आपकी सदैव ऋणी रहूँगी और यह आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मेरे साथ रहे।

आदरणीय गुरुदेव डा.व्ही.के.मोरे, डा.व्ही.व्ही.द्रविड, प्रा.आय.एम. मुजावर, प्रा. वेदपाठक, प्रा.तिवले, प्रा.हिरेमठ, प्रा.के.पी.शाह, प्रा.भागवत जी का आशीर्वाद मेरे साथ रहा, उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

माता - पिता, भाईयों एवं सहेलियों की आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनाएँ मेरे साथ थीं।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के प्रति विशेषत: ग्रंथपाल डा.जे.बी. - जाधव जी के प्रति आभारी हूँ। इस लघु शोध-प्रबन्ध को समय पर टंकित करने का कार्य श्री बालकृष्ण रा.सावंत जी ने किया है उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु-प्रबन्ध अत्यंत विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखती हूँ।

(विरो देवी कृष्ण रमोत्रा)

कोल्हापुर।
२७ मई, १९९१।

••